Gospel Truth
सुसमाचार की सत्यता

विश्वभर में मिशन क्षेत्र के लिए बाईबल निर्देश एव प्रोत्साहन

ISSUE - 1 | International Editor : MICHAEL W. SMITH | मुद्दा - 1

सुसमाचार का शुभ संदेश

रात के दिव्य रोशनी जगमग उठी और आकाश में बहुत सारी स्वर्गीय सेना भर गई। सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति की स्वर में, स्वर्गदूतों का दल आवाज उठाऐं। उन्होंने साहस और आनन्द के साथ घोषणा की "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में (जिनसे वह प्रसन्न है) शांति हो।" (लूका 2 :14)

दो हजार साल पहले इस अनोखा, अद्भुत दृश्य को देखना कितना सुखद अनुभव रहा होगा। मानव जाति के लिए शांति और सद्भावना का संदेश लेकर परमेश्वर के ये दूत पृथ्वी पर किस कारण से आया? यह जीवित परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का जन्म था। तीस साल बाद यीशु को देख कर यूहन्ना ने कहा, "देखो यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" (यूहन्ना 1:29)। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि स्वर्गदूत ने मसीहा के आगमन पर खुशी मनाई जो मानव जाति को उद्धार दिलाएगा और उनके

"जैसा थके मांदे के प्राणों के लिए ठण्डा पानी होता है, वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार भी होता है।" (नीतिवचन 25:25)

जीवन में पाप और मृत्यु की अधिकार को तोड़ देगा। संसार अत्यधिक पाप में हैं और यह दुखरू, अपराधबोध, अकेलापन, बंधन और निराशा लाता है। लोगों के जीवन और परिवारों को शैतान की शक्ति द्वारा बर्बाद किया जा रहा है। परन्तु, परमेश्वर की स्तुति करो अच्छी खबर है!

यीशु मसीह की शक्ति के माध्यम से अशांत दुनिया के बीच में अभी भी मानव जाति के लिए शांति है। यीशु मसीह के द्वारा पाप के अधिकार को तोडा जा सकता है। तनाव और कठिनाई के दिनों के दौरान अच्छी सन्देश प्राप्त करना मन को ताजा करती है।

एक अच्छी खबर हर परेशान आत्मा और यह यीशु मसीह सुसमाचार में पाया जाता है। जैसा थके मांदे के प्राणों के लिए ठंडा पानी होता है, वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार भी होता है। (नीतिवचन 25:25)

यीशु मसीह हमारे लिए वह करने आये जो हम अपन आप से नहीं कर सकते। यीशु मसीह अभी भी आध्यात्मिक रूप से बीमार लोगों को पुर्नस्थापित और चंगाईकरके लोगों के जीवन में आश्चर्य कर्म कर रहे हैं। जहाँ निकलने का कोई रास्ता नहीं हैए वहाँ यीशु रास्ता निकालेंगे। यीशु मसीह असंभव को संभव बना देंगे। पहला सन्देश जो यीशु

(पेज 2 पर जारी)

संपादकीय	बाइबिल अध्ययनः सत्य परमेश्वर के वचन की जॉच करें जैसा कि बेरियन लोगें ने किया था।	सच क्या है? एक परम सत्य है जो केवल मसीह में पाया जाता है ।	प्रश्न उत्तर	अवसर का एक शब्द तुम बहुत सी गोरैयों से अधिक मूल्यवान हो।
पेज.3	पेज.4	पेज.5	पेज.7	पेज.8

बाइबल
किस बारे में सिखाती है

परमेश्वर का वचन
2 तीमुथियुस 3:16–17, 2 पतरस 1:20–21 मत्ती 24:35

प्रेम का बंधन
मत्ती 22:37–40, यूहन्ना 14:21–23, 1 यूहन्ना 4:7–11

पछतावा
प्रेरित 3:19, प्रेरित 17:30, 2 कुरिन्थियों 7:10

नया जन्म
यूहन्ना 3:3–7, 2 कुरिन्थियों 5:17, रोमियों 6:1–4, इफिसियों 2:1,5–6

पाप से स्वतंत्रता
1 यूहन्ना 5:18, मत्ती1:21, यूहन्ना 8:11

पवित्र आत्मा का भरना
प्रेरित 19:2, प्रेरित 15:8–9, प्रेरित 1:8

पवित्रता
लूका 1:73–75, इब्रानियों 12:14, 1 पतरस 1:15–16, तीतुस 2:11–12, रोमियों 6:22

परमेश्वर का राज्य
लूका 17:20–21, रोमियों 14:17, यहून्ना 18:36 कलीसिया प्रेरित 2:47, इफिसियों 4:4–6, 1 कुरिन्थियों 12:12–13, कुलुसियों 1:18

कता
यूहन्ना 17:20–23, गलातियों 3:28, प्रकाशित वाक्य 18:2–4

आदेश
मत्ती 28:19–20, मत्ती 26:26–30, 1 कुरिन्थियों 11:23–27, यहून्ना 13:14–17

दैवीय चंगाई
लूका 4:18, यशायाह 53:4,5, याकूब 5:13–16

विवाह की पवित्रता
मत्ती 19:5–6, लूका 16:18, रोमियों 7:2–3, 1 कुरिन्थियों 7:10–11

बाहरी रूप
1 तीमुथियुस 2:9–10, 1 कुरिन्थियों 11:14–15, व्यवस्थाविवरण 22:5

अंत का समय
2 पतरस 3:7–12, यहून्ना 15:28–29, 2 कुरिन्थियों 5:10, मत्ती 25:31–46

शांतिवाद
लूका 6:27–29, लूका 18:20 आराधना यूहन्ना 4:23–24, इफिसियों 5:19, 2 कुरिन्थियों 3:17

महान आदेश
मरकुस 16:15

(पेज 1 से जारी)

प्रचार किया वह सुसमाचार के आनंद के सन्देश को समाधित करता है। ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभ के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।'' (लूका 4:18–19)।

यीशु आपसे प्यार करता है और सुसमाचार की आनंद की खबर आज भी वास्तविक है। यीशु अभी भी पापियों को क्षमा करने और बीमारों को ठीक करने के कार्य में लगे हुए हैं। यीशु हर उस व्यक्ति की सेवा करेंगे जो दुखी है, अन्धा है, घायल या चोटिल है। आपको बस अपना हृदय खोलना है और प्रभु को पुकारना है। वह तुम्हारी पुकार सुन रहा है।

''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगें को सुसामाचार प्रचार करो।'' (मरकुस 16:15)। आशा का यह गौरवशाली सुसामचार हर एक पृष्ठ भूमि, हर एक मनुष्य एव हर एक राष्ट्र के लोगो के लिए है। जैसे ही हम सुसमाचार की इस खबर की वास्तविकता का अनुभव करते हैं, तो आईए हम इसे आस–पास के उन लोगें के साथ साझा करने के लिए, वफादार रहें जो दुखी हैं। यह इस बारे में नहीं है कि हम क्या कर सकते हैं, यह इस बारे में है कि यीशु क्या कर सकता है और क्या करेंगे। सुसमाचार के शुभ सन्देश के लिए परमेश्वर की महिमा हो।

गॉस्पेल ट्रुथ बाइबल की सच्चाइयों में निर्देश और प्रोत्साहन के लिए चर्च ऑफ गॉड के हित में प्रकाशित एक त्रैमासिक पत्रिका है। हमसे ऑनलाइन मुलाकात करें www.thegospeltruth.org और वर्तमान प्रकाशन प्राप्त करने के लिए ईमेल अधिसूचना सूची की सदस्यता लें। गॉस्पेल ट्रुथ को स्थानीय वितरण के लिए कई देशों में मुद्रित किया जाता है और यह स्वतंत्र इच्छा की पेशकश द्वारा समर्थित है। अनुरोध पर एक कर रसीद भेजी जाएगी।

—Editor, Michael Smith

GospelTruth, P.O. Box 2042, Nixa, MO 65714 USA
editor@thegospeltruth.org

संपादकीय

परन्तु यदि हमारा सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नष्ट होनेवालों के लिये है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि "वह प्रभु हैं, और अपने विषयों में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।" (2 कुरिन्थियों 4:3–5)।

हम कलयुग में रहते हैं जो न केवल शरीर की भावनात्मक चीजों से बल्कि धर्म से भी अंधा हो गया है। मैं चाहता हूँ कि इस दुनिया का हर व्यक्ति सच्ची शांति को जाने और अनुभव करे जो यीशु मसीह में पाई जाती है। कोई भी सेवक या कलीसिया जो स्वयं का प्रचार करता है वह झूठा है। हमारी अपनी शक्ति और क्षमता में इस खोई हुई दुनिया को बचाने के लिए हमारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। हमारे पास लोगों को उदारकर्त्ता की ओर इंगित करने की क्षमता है—न केवल हमारे शब्दों के द्वारा, बल्कि उस प्रकाश के द्वारा जो हमारे भीतर से मसीह निकलता है। मैं चाहता हूँ कि सुसमाचार की महिमामय रोशनी इस अंधेरे को बुरे समय में और अधिक उज्जवल हो। विश्व भर में कई वर्षों की सेवकाई के माध्यम से, मैंने वचन की सच्चाई में स्थानीय सेवाकार्य को स्थापित करने में मदद करने की बड़ी आवश्यकता को पहचाना है।

पर हमसे मिलें
www.thegospeltruth.org
सदस्यता लेने और एक्सेस
करने के लिए प्रकाशन पुरालेख.

यह हासिल करने या किसी को समूह में शामिल करने के बारे में नहीं है। यह लोगेां को अपने इलाके में कलीसिया बनाने के लिए सिखाने और प्रोत्साहित करने के बारे में है। आवश्यकता तब आती है जब लोग आत्मा के नेतृत्व में सत्य पर चलते हैं। कुछ महीने पहले केन्या में साधारण सुसमाचार सन्देश के बाद स्थानीय सेवक ने मुझसे कहा कि कई सेवक जो आते हैं, वे अपने छवि बनाते हैं। किसी व्यक्ति या धर्म का अनुसरण करने में कोई सच्ची स्वतंत्रता या शांति नहीं मिलती है। मैं धर्म के प्रति अपने शिथिलता और उनमें पाई जाने वाली संसारिकता को स्वीकार करता हूँ। साथ ही मैं परमेश्वर, सत्य एवं उसके सारे बच्चों के प्रति मेरे प्रेम को जोर शोर से प्रचार करता हूँ। मेरा हृदय पापियों, पाखण्डियों और सच्ची संतुष्टता पाने से जो पीछे हट जाते हैं उन के लिए रोता हूँ।

सच्ची संतुष्टि पाने किसी गिरजाघर की चार दीवारों के भीतर और न ही अच्छा धार्मिक जीवन शैली का पालन करने से पाया जाता है। यह यीशु मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण के अनुभव में और संकीर्ण, आनंदमय, त्यागपूर्ण, प्रेमपुर्ण बाईबिल मार्ग का स्वतंत्र रूप से अनुसरण करने में पाया जाता है जो अनन्त जीवन की ओर ले जाता है।

यह मेरी पत्नी और मेरी इच्छा है कि हम इस पेपर के लिखित शब्दों के माध्यम से कुछ मूलभूत, वचन की सच्चाइयों को साझा करें जो ईमानदार दिलों को सत्य में स्थापित होने में सहायता कर सकते हैं। जब भी प्रभु हमें समय और प्रेरणा देंगे हम इसे प्रकाशित करेंगे। हम इस प्रयास के लिए, प्रार्थना की सराहना करेंगे कि यह आध्यात्मिक रूप से सफल होवे।

आइए हम सभी इस समय प्रत्येक बैठक में प्रभु की आशीष के लिए, प्रार्थना करें। प्रार्थना में शक्ति हैं, और परमेश्वर की शक्ति से कुछ पहाड़ों को गिराने की आशा करता हूँ।

बाइबल अध्ययन के लिए, 6 सलाह

आरंभिक स्थान खोजें
अनुछेद या पुस्तक चुनें अध्ययन करने के लिए बाइबिल, सुसमाचार की पुस्तकें, याकूब, तीतुस, 1 पतरस और 2 यूहन्ना सभी शुरुआती लोगें के लिए अच्छे विकल्प हैं।

प्रार्थना से आरंभ करें
प्रभु से बुद्धि अंगुवाई और समझ माँगें। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो महसूस करें कि जिन रूाब्दों का अध्ययन कर रहे हैं वे प्रभु से प्रेरित हैं। ''तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है।'' भजन (119:130)

संपूर्ण अनुछेद पढ़ें
कई झुठे सिद्धांत वचन के एक भाग के द्वारा स्थापित किये गये हैं। जिन्हें सन्दर्भ के बाहर से लिया जाता है। पूरी जानकारी पाने के लिए पूरा अनुछेद पढ़ें।

विवरण पर नजर लगायें
अनुछेद को पद दर पद अलग करें और गहरे अर्थ के लिए अध्ययन करें। शब्द परिभाषाएं सहायक वचन देखें। जो प्राप्त हुआ उसे लिखें।

जीवन अनुप्रयोग सिद्धांत
परमेश्वर के वचन को आपसे व्यक्तिगत रूप से बात करने दें। यह वचन का भाग मेरे जीवन पर कैसे लागू होता है?

वचन पर चलनेवाले बनो
वचन को अपने दैनिक जीवन में व्यवहार में लाओ । मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और ज्ञान सहित दुसरे को सिखाओ और चिताओ। (कुलुस्सियों 3:16)

बाईबिल अध्ययन मार्गदर्शिका

विषय : सत्य

वचन पढ़नाः

यूहन्ना 18:37–38 पिलातुस ने उससे कहा," तो क्या तू राजा है? "यीशु ने उत्तर दिया," तू कहता है, कि मैं हूँ। मैं इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूँ कि सत्य की गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है वह मेरा शब्द सुनता है। "पीलातुस ने उससे कहा सत्य क्या है?" और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया और उनसे कहा मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं पाता।

सत्य की परिभाषा : वह जो तथ्यों या वास्तविकता के अनुरूप हो शुद्धता, सटीकता, सत्यता, वास्तविक, ईमानदार घटना होने की अवस्था (ग्रीक में: छुपाना नहीं)।

I. यीशु सत्य है

A. यूहन्ना 1:14 वचन (यीशु) देहधारी हुआ और अनुग्राह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में ड़ेरा किया।

B. यूहन्ना 1:17 अनुग्राह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।

C. यूहन्ना 14:6 मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ।

D. इफिसियों 4:20–21 यीशु में सत्य है।

II. परमेश्वर का वचन सत्य है

A. यूहन्ना 17:17–19 परमेश्वर का वचन सत्य है।

B. 2 तीमुथियुस 2:15 वचन को अध्ययन करो और ठीक रीति से काम में लाओ।

C. थस्सलुनीकियों 2:10 उनका उद्धार होने के लिए सत्य से प्रेम रखना चाहि।

III. सत्य और आराधना के आत्मा

A. यूहन्ना 16:13 पवित्र आत्मा सभी सत्य में मार्ग्एदर्शन करेगा।

B. यूहन्ना 4:22–24 आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

IV. सत्य अपरिवर्तनीय और चिरस्थायी है

A. यशायाह 40:8 परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।

B. भजन संहिता 100:5 सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

C. लूका 21:33 आकाश और पृथ्वी टल जाए परन्तु मेरी बातें कभी न टलेगी।

V. सत्य के लाभ

A. यूहन्ना 8:32 सत्य स्वतंत्र करता है।

B. यूहन्ना 3:19–21 सत्य प्रकट करता है और ज्योति के निकट लाता है।

C. 1पतरस 1:22–23 सत्य का पालन करने से हमारी आत्मा शुद्ध होती है।

VI. सत्य से हट जाना

A. 2 पतरस 2:1–2 तुम्हारे बीच में झुठे शिक्षक होंगे।

B. मत्ती 15:9 मनुष्यों की विधियों को

VII. झुठे शिक्षक

A. 2 पतरस 2:1–2 तुम्हारे बीच में झुठे शिक्षक होंगे।

B. मत्ती 15:9 मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।

C. तीतुस 1:14 उन पर ध्यान मत दो।

D. तीमुथियुस 5: 3–5 झुठे शिक्षकों से दूर रहो।

VIII. सत्य का पालन न करने वालों को दण्ड

A. रोमियों 2:8–9 क्लेश और संकट।

B. 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 प्रतिशोध, पलटा लेना ।

IX. कलीसिया

A. 1 तीमुथियुस 3:15 सत्य का खंभा और नींव।

B. जकर्याह 8:3 सिय्योन (कलीसिया) सत्य का नगर कहलायेगा।

X. चुनौती

A. नीतिवचन 23:23 सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं।

B. 1यूहन्ना 1:6 आज्ञाओं का पालन करते हुए सत्य का अभ्यास करें।

C. इफिसियों 6:14 सत्य से अपनी कमर कसकर खड़े रहो।

प्रार्थना : मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ। भजन – संहिता 25:5

सत्य क्या है?

बाइबिल अध्ययन के लिए सहयोगी लेख

सत्य क्या है? पीलातुस ने मुकदमे के दौरान यीशु से पुछताछ की यह प्रश्न आज भी गूंजता है क्योंकि दुनिया भर में लोग जीवन और उसकी समस्याओं के उत्तर खोज रहे हैं। कई सेवक, कलीसियायें और सभी धर्मविज्ञानं के लोग और दर्शन शास्त्रियों ने सच्चाई रखने का दावा किया है। इतने सारे परस्पर विरोधी विचार और राय होना कैसे संभव है जबकि सभी को सही माने जाते हैं ?

यीशु सत्य है

वास्तविकता यह है कि अंतिम सत्य मौजूद है, और वह है केवल यीशु मसीह में पाया जाता है। यीशु सत्य है। शब्द परमेश्वर का वचन देहधारी हुआ और प्रकाश देने ज्ञान देने, पाप को प्रकट करने, पाप से छुटकारा और पवित्रता की वास्तविकता को दिखाने और सिखाने और पिता परमेश्वर के साथ संबंध आत्मा की शांति की वास्तविकता को संभव बनाने के लिए हमारे बीच में वास किया।

सत्य अपरिवर्तनीय है

परमेश्वर ने लोगें को निजी एवं व्यक्तिगत रूप से सत्य के मार्ग पर ले जाने के लिए पवित्र आत्मा को भेजा। सत्य विचार , पृष्ठभूमि, कलीसिया का इतिहास, परंपरा, नस्ल और पंथ के स्थान पर है। परमेश्वर का वचन की सच्चाई पीढ़ी–दर–पीढ़ी नहीं बदलती है। परन्तु यह अभी भी सटीक है और इस वर्तमान, दुष्ट दुनिया में अनन्त जीवन का उत्तर देती है। दर्शन और चर्च आंदोलन आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु सत्य शाश्वत और अपरिर्वतनीय है। सत्य हमारी धारणाओं और व्यक्तिगत स्थितियों पर निर्भर नहीं हैं। परमेश्वर का वचन हर राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति पर लागू और उपयुक्त है। परमेश्वर की आत्मा कभी भी वचन की सच्चाई के विपरीत काम नहीं करेगी।

सत्य स्वतंत्र करता है

सत्य सचेत एवं स्वतंत्र करता है। मनुष्य के धर्म और पंथ बंधन और भ्रम उत्पन्न हैं। परस्पर विरोधी सिद्धांत एवं व्यापक कलीसिया होने पर भी इस तथ्य को समाप्त नहीं कर सकते। यह एक सत्य है। वह सत्य मसीह में पाया जाता है, बाइबल द्वारा। संग्रहित किया गया है, और पवित्र आत्मा द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।

परमेश्वर के सत्य को सेवकों के वोट तथा किसी बिशप या धार्मिक सेवक के आदेश के माध्यम से जोड़ा या घटाया नहीं जा सकता। परमेश्वर का वचन सत्य के रूप में स्वयं स्थिर है। धर्मग्रंथ पूर्ण सिद्धांत है, परमेश्वर के सच्चे लोग परमेश्वर के वचनों का सत्य मानकर उसका सम्मान एवं आदर करते हैं और यह मनुष्य के एक एवं सारे म संग्रहित किया ग्या है, और पवित्र आत्मा द्वारा इसकी पुष्टि की गई है। परमेश्वर के सत्य को सेवकों के वोट तथा किसी बिशप या धर्मिक सेवक के आदेश के माध्यम से जोड़ा या हटाया नहीं जा सकता। परमेश्वर का वचन सत्य के रूप में स्वयं स्थिरहै। धर्मग्रंथ पूर्ण सिद्धांत है, परमेश्वर के सच्चे लोग परमेश्वर के वचनों का सत्य मानकर उसका सम्मान आदर करते हैं और यह मनुष्य के एक एवं सारे मतों से बढ़कर है।

वचन देह बन गया

हमारी दुनिया में बहूत से लोग मसीह को स्वीकार करते हैं, लेकिन उसके वचन को लागू करने की सच्चाई से इनकार करते हैं। कुछ लोग बाइबल और यीशु के सिद्धांतों के बीच अंतर करने की कोशिश करते हैं। वास्तविकता में वे ही हैं। जब कोई नियम की शिक्षा के भाग को अस्वीकार करता है तो वे स्वयं मसीह को अस्वीकार करते हैं।

झूठे भविष्यवक्ता को अस्वीकार करो

प्रारंभिक कलीसिया में झुठे शिक्षक थे और आज भी हैं। वे सेवक हैं जो मसीह को स्वीकार करते हैं, फिर भी सत्य की खारापन को नहीं सिखाते हैं। वे घोषित सत्य की शिक्षा देते हैं जो पापपूर्णता को बढावा देता है और भीड़ को आकर्षित करने के लिए शरीर की इच्छाओं को पूति करता है। अक्सर सबसे बड़ा धोखा उन कलीसियाओं और सेवकों के बीच पाया जाता है जो बहुत सारे सत्य सिखाते हैं। सत्य के साथ मिश्रित त्रुटि की तुलना में पूर्ण त्रुटि को पहचानना सरल है। आइए जो वचन में लिखा है, उसमें न तो कुछ जोड़ें और न ही घटे ।

(पेज 6 पर जारी)

(पेज 5 से जारी)

संप्रदायवाद से अलग होवें

इन अंतिम दिनों में, कई लोग परमेश्वर के वचन की सच्चाई से दूर जा रहे हैं और फिर भी दया की गवाही जारी रख रहे हैं। परमेश्वर के सच्चे लोगो को पवित्रशास्त्र मनुष्य के संगठनों से खुद को अलग करने और सेवकों की संगति से दूर रहने की शिक्षा देता है। स्वर्ग विश्वासयोग्य और पवित्र लोगो का आह्वान करता है, परन्तु नरक उन लोगो का इंतजार कर रहा है जो सत्य की संपूर्णता से इनकार करते हैं। पवित्र आत्मा वचन की गवाही देता है।

यह आवश्यक है कि परमेश्वर का प्रत्येक संतान पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करे। आत्मा हर उस व्यक्ति के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा जो सत्य की खोज में ईमानदार और निष्ठावान है। अतः लेखा भी अलग अलग स्तर के लोगों के किये अलग अलग स्तर में होगी। समस्या तब आती कोई व्यक्ति आत्मा और लिखित वचन की जाँच से परे निकल जाता है। फिर धोखा शुरू हो जाता है और लोग सत्य के प्रति अपने दृष्टिकोण में आश्वास्त हो जाते हैं। केवल ईमानदारी ही किसी को परमेश्वर के प्रति ग्रहणयोग्य नहीं बनाती है, परन्तु ईमानदार एवं सच्चाई सत्य के साथ मिलकर मानव जाती को परमेश्वर के प्रति ग्रहणयोग्य जीवन जीने में सक्षम बनाती है। वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहें और जाने की आत्मा कभी भी परमेश्वर के वचन से हटकर मार्गदर्शन नहीं करेगी।

क्या तुम सत्य पर चल रहे हो?

परमेश्वर का कलीसिया उन लोगो की व्यक्तिगत और सामूहिक संगति है जो जीवन के हर क्षेत्र में सत्य को मार्ग देने का अधिकार दे रहे हैं। सिय्योन, परमेश्वर का कलीसिया है सत्य का नगर होना चाहिए। यह चैपल के दारवाजे पर लिखा नाम नहीं बल्कि इस जीवित सत्य की वास्तविकता है। आपके जीवन में सत्य की रौशनी जगमगाती रहे।

तुम चलने वाले बनो

परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल
नेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।
क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो
और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस
मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह
दर्पण में देखता है।
इसलिये कि वह अपने आप को
देखकर चला
जाता और तुरन्त भूल जाता है कि
मैं कैसा था। पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता
की व्यवस्था पर ध्यान करता
रहता है, वह अपने काम में इसलिये
आशीष पाएगा
कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा
ही काम करता है।

याकूब 1:22–25

प्रश्न
उत्तर

(निम्नलिखित लेख दिवंगत भाई ओस्टिस विल्सन जूनियर के लेखन से लिया ग्या है।)

प्रश्न: हम अक्सर यह कहते हुए सुनते हैं यदि मनुष्य अपने विश्वास के प्रति ईमानदार हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वो किस पर विश्वास करता हैं। सत्य क्या है?

उत्तर: नहीं, यह सच नहीं है और लोगें के लिए यह संभव है कि वे गलती में भी उतने ही ईमानदार हो जितना कि सच्चाई में। परमेश्वर का वचन कहता है, परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतिनिधि करके उद्धार पाओ,
2 थिस्सलुनीकियों 2:13। हम यहां देखते हैं कि सच्चाई पर विश्वास परमेश्वर द्वारा हमारे लिए बना मार्ग और योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है उद्धार की प्राप्ति के लिए ।
2 तीमुथियुस 4:3–4 कहता है, क्योंकि उस समय आ गया कि वे खरा उपदेश न सह सकेंगे परन्तु कान खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहूत से उपदेशक बटोर लेगें और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियो पर लगेंगें इनमें से कुछ लोग उतने ही ईमानदार और उत्साही और अपने विश्वास के प्रति समर्पित हैं जितने लोग सत्य पर हैं।

गलातियों 1:8–9 में पौलुस ने कहा, परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड जो हम ने तुमको सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो श्रापित हो। जैसा हम पहले कह चुके है वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ कि,उस सुसमाचार को छोड जिसे तुम ने ग्रहण किया है यदि और तुम्हें ुनाता है तो श्रापित हो। यह निश्चित रूप से कठोर भाषा है और जो यह सिखाता है वह यह है कि मसीहियों का विश्वास सत्य पर आधारित और निहित चाहिए और यह सत्य से घिरा रहना चाहिए और सत्य से परे कभी नहीं जाना चाहिए और न ही किसी झूठी बात को स्वीकार करना चाहिए।

2 कुरिन्थियों 1:12 में पौलुस अपने विषय में कहता है की सादगीपन एवं परमेश्वर के प्रति वफादारी एक व्यक्ति किसी भी विश्वास या काम में इमानदार हो सकता है परन्तु केवल परमेश्वर के प्रति वफादारी ही उसे उद्दार दिलाएगी और परमेश्वर में स्थिर करेगी। पौलुस स्वंय इसका उत्कृष्ट उदाहरण था। प्रेरितों के काम 26:9–10 में पौलुस कहता है, मैंने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में बहुत कुछ करना चाहिए। अपनी पूरी ईमानदारी में भी, यदी उसने दमिश्क के मार्ग में जब उसने आमने सामने मुलाकात की थी। उसने मसीह के प्रति अपने आप को समर्पण नहीं किया होता और उस पर विश्वास नहीं किया होता, तो वह निश्चित रूप से उद्दार से चूक गया होता।

मैं नहीं मानता की पौलुस सच्चाई और मसीह विश्वास के प्रति पहले की तुलना में अपने यहूदी धर्म और अपने पिता की परम्पराओं के प्रति थोडा अधिक ईमानदार था। बिना किसी संदेह के आज भी कुछ लोग हैं जो उतने ही ईमानदारी और उत्साही हैं और गंभीर गलतियों में उतने ही बड़े बलीदान करते है पर वास्तव में उद्दार की कुछ बुंनियादी अनिवार्यताओं से इनकार करते हैं। याद रखें, केवल ईमानदारी नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रति ईमानदारी भी मायने रखती है।

हम यह भी विचार करें कि यदि प्रत्येक मनुष्य का विश्वास किसी भी प्रकार का हो यह चीज़ उसके लिए तभी तक मान्य और स्वीकार्य होगी जब तक वह उसके प्रति ईमादार रहे। इससे जीने के लिए कई मानक स्थापित हो सकते है, लेकिन परमेश्वर के पास केवल एक ही मानक है और वह सभी मनुष्यों को उस पर शामिल होने के लिए बुलाता है। इफिसियों 4:5 कहता है, एक ही विश्वास है एक ही परमेश्वर सभी विश्वसियों को विश्वास की एकता में बुला रहा है। यदी हम परमेश्वर के वचन की विश्वासयोग्य शिक्षा पर विश्वास करेंगे तो हम सभी को इसमें लाने का प्रावधान किया गया है।

Printed Matter -Posted Under Rule 114 & 121 P&T Guide Indian Constitution Act 25th & 19(1) Section
TAMIL EDITION - FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY

अभी सदस्यता लें!

आसान। तेज़। सुविधाजनक। मुफ्त।

अपनी निःशुल्क इलेक्ट्रॉनिक सदस्यता सुरक्षित करने के लिए हमसे ऑनलाइन www.gospeltruth.org पर मिलें। आपको प्रत्येक संस्करण तक पहुंचाने के साथ ईमेल सूचना प्राप्त होगी। आज ही सदस्यता लें और दुसरों के साथ साझा करें।

अवसर का एक भाब्द

तुम अधिक मूल्यवान हो

क्या दो पैसे की पाँच गोरैयाँ नहीं बिकतीं? तो भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं। इसलिये डरो नहीं, तुम बहुत गोरैयाँ से बढ़कर हो। (लूका 12:6–7)।

यीशु मसीह के समय में, एक पैसे में दो गोरैयाँ खरीदी जा सकती थीं। चार गोरैयाँ दो पैसों में खरीदी जा सकती थीं और पाँचवीं गोरैयाँ व्यापारियों द्वारा चार गोरैयाँ खरीदने के लिए संभावित खरीदारों को लुभाने के लिए दिया जाने वाला अतिरिक्त बोनस था। चार खरीदें एक मुफत पाएं। एक पैसा एक ग्रामिण श्रमिक द्वारा एक दिन में अर्जित की जाने वाली मजदूरी का लगभग 1ध्16 हिस्सा था। इसलिए गोरैयाँ आम थीं और बहुत कम मूल्य की थीं।

यीशु एक व्यक्ति के प्रति भी परमेश्वर की देखभाल को दर्शाते हैं और बताते हैं कि कैसे परमेश्वर एक गोरैया –पाँचवीं चिड़िया जैसी सामान्य और सस्ती चीज भी नज़र अंदाज़ नहीं करते हैं। परमेश्वर उन चीज़ों को भी महत्व देते हैं जिन्हें दुसरे लोग बेकार समझ सकते हैं। कितना ही अधिक परमेश्वर हर मनुष्य से प्रेम करता है और उसकी चिंता करता है। वह भीड़ से परे देखता है और व्यक्ति को महत्व देता है। परमेश्वर को आपके जीवन के हर विचार, भावना, अनुभव और परिस्थिति हर विवरण में रुचि है।

यीशु कहा कि तुम्हारे सिर के सब बाल गिने हुए हैं। औसत मानव के सिर में 100,000 बाल होते हैं। परमेश्वर हमारे बारे में छोटी–छोटी बातें जानता है। वह हमारा राजा, हमारा उद्धारकर्ता, हमारा मित्र, हमारी सहायक और हमारा अनुग्रह दाता बनने के लिए सदैव मौजूद है। जब जीवन में परीक्षाएँ, और कठिनाइयाँ आएं तो मत डरो। परमेश्वर तुम्हें नहीं भूले हैं। वह आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी, अमीर और गरीब, मजबूत और कमजोर, बिमार और स्वस्थ को महत्व देता है। तुम बहुत सी गोरैयाँ से अधिक मूल्यवान हो।

CONTACT :-

The Gospel Truth
605 Bishops Ct.
Nixa, MO 65714
USA
Email:
editor@thegospeltruth.org

प्रभु के प्रति पवित्रता